CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5810

5810

राजस्थान के तीन मन्दिर

गोवर्धनलाल जोशी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजस्थान के तीन मन्दिर

●

गोवर्धनलाल जोशी

5810

राजस्थान ललितकला अकादमी
जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर्वाधिकार सुरक्षित

राज्य संग्रहालय ... लखनऊ
क्रमः 5810
प्राप्ति : दि—
State Museum, Library, Lko.

प्रकाशक :
राजस्थान ललितकला अकादमी
जयपुर ।

मुद्रक :
अजन्ता प्रिन्टर्स,
घीवालों का रास्ता, जयपुर ।

सहयोगी :
पारस भंसाली
बी. एन. टंडन

मूल्य :
दस रुपये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोवर्धनलाल जोशी

कलाविद् श्री गोवर्धनलाल जोशी राजस्थान के उन वरिष्ठ कलाकारों में हैं जिन्होंने अपनी निरन्तर कला-साधना से कला को नए आयाम दिए हैं। वह उस पीढ़ी के कलाकार हैं जब भारतीय कला, गुरु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के नेतृत्व में पाश्चात्य प्रभावों से मुक्त होकर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित करना चाहती थी।

"बाबा" के नाम से अपने असंख्य शिष्यों से सम्बोधित जोशीजी ने अपने जीवन-काल के प्रारम्भिक समय में ही पाश्चात्य प्रभावों की चुनौती को स्वीकारा और राजस्थानी कला परम्परा से प्रेरणा लेकर आधुनिक युग की पृष्ठ भूमि में उन परम्पराओं को नया कलेवर देकर स्थापित किया।

मूलतः आपकी चित्र शैली परम्परावादी राजस्थानी लघु चित्र शैली एवं प्रचलित लोक शैली का समन्वय है जो आपकी परिमार्जित तूलिका से निकलकर एक विषद शैली के रूप में निखर हुई है।

प्रस्तुत पुस्तक कलाकार जोशीजी का साहित्य के क्षेत्र में पहला प्रयास है। एक संवेदनशील कलाकार का अतीत के किसी अज्ञात कलाकार के मूक सन्देशों के प्रति आकृष्ट होना स्वाभाविक ही था। किसी ने कहा है कि कोई जन्मजात कवि नहीं होता, प्रेरणाएँ उसे कवि बना देती हैं। तो फिर राणकपुर, बाड़ोली और जगत के शिल्पियों और उनकी मूर्त सम्भावनाओं से प्रेरणा लेकर कलाविद् जोशीजी का साहित्यकार हो जाने में आश्चर्य नहीं है। प्रेरणा इतनी सशक्त थी कि जोशीजी का आलेख स्वतः ही प्राणवान बन गया।

अपने रेखाचित्रों में जोशीजी ने बड़े समर्पण की भावना से प्राण प्रतिष्ठा की है। वह युग-युग तक पीढ़ियों को भारत के गौरवमय अतीत का सन्देश देती रहेगी।

प्रस्तुत पुस्तक एक सक्षम कलाकार का अपने अग्रज कलाकारों के प्रति श्रद्धांजलि ही नहीं वरन् भविष्य के कलाकारों के लिए प्रेरणा भी सिद्ध होगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

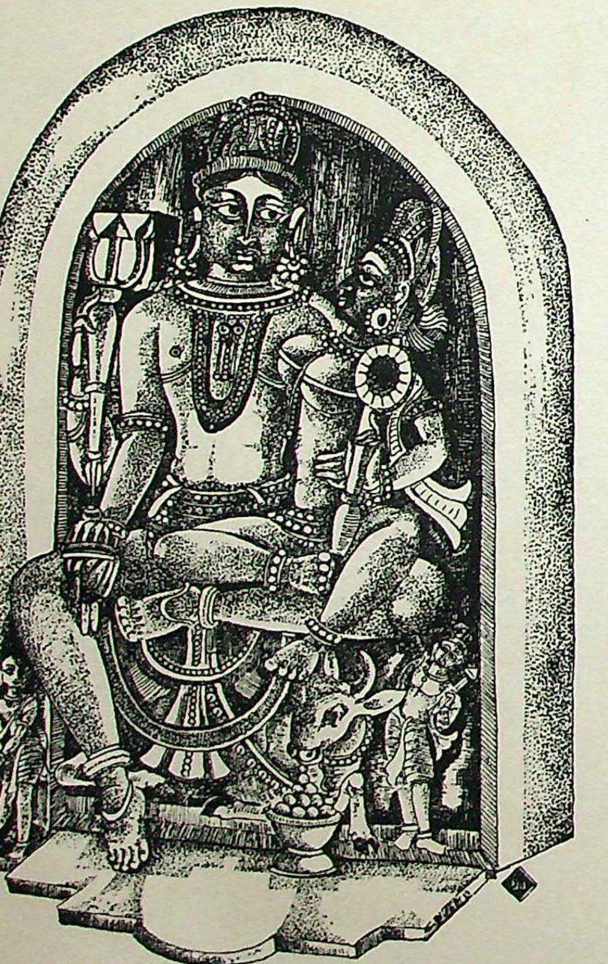

७ से ८

९ से १८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जगत में अम्बा माता का मन्दिर

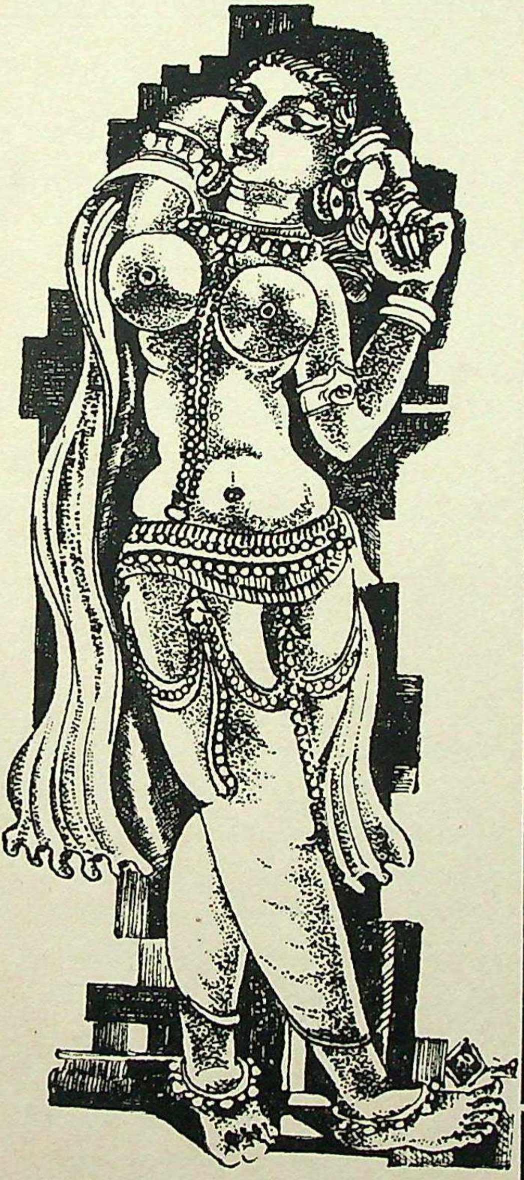

१९ से २८

राणकपुर

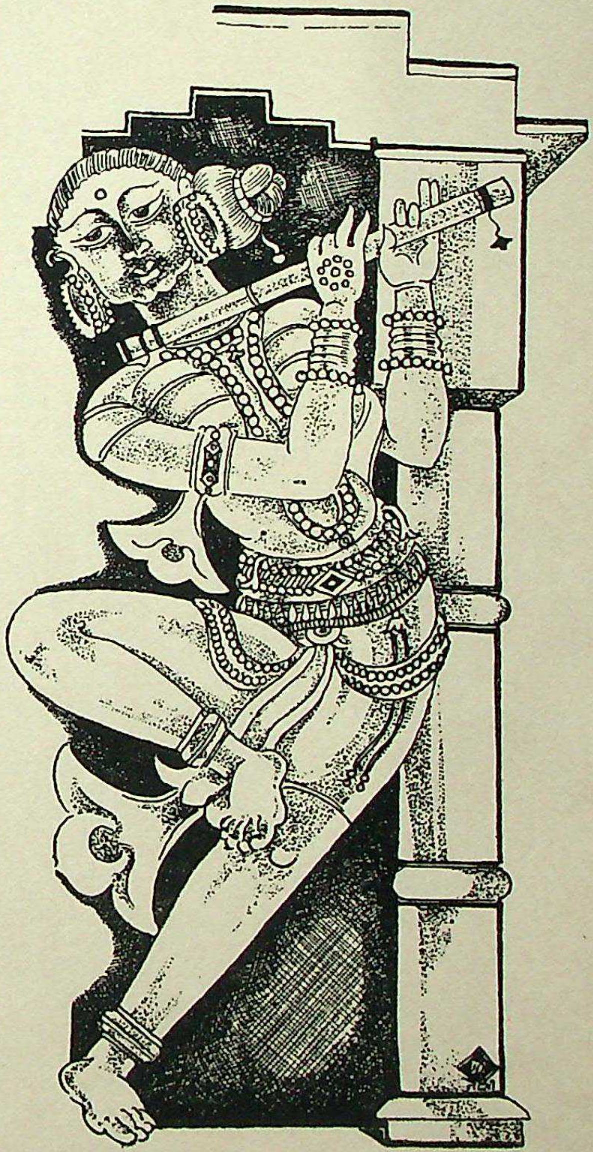

२९ से ३९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

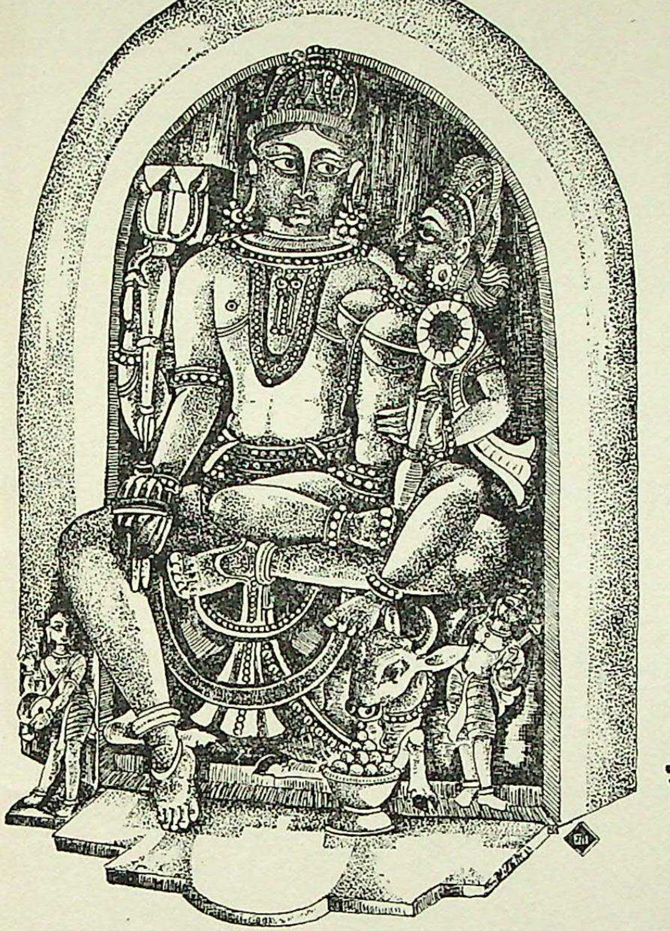

भारतीय शिल्प-आदर्श

प्राचीन भारत में शिल्प और मूर्तिकला के कई समृद्धशाली केन्द्र थे । विदेशों से आने वाली अनेक जातियां यहां आकर बस गई और उन्होंने अपना प्रभाव यहां के कला-शिल्प पर डाला, जिसके फलस्वरूप जो विविधता हमारी मूर्तिकला में आई वह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है । लेकिन प्रारम्भिक स्थिति की बुनियादी कड़ी विकराल काल की तीव्र गति और प्रभावों को सहते हुए आज भी अक्षुण्ण रूप से देश के विभिन्न कला-केन्द्रों में दिखाई देती है । यही नहीं अपितु उसने अनेक प्रभावों और विभिन्नताओं को खूबी के साथ एक सूत्र में पिरोये रक्खा है ।

भेद वास्तव में स्पष्ट दृष्टिगत होते हैं और वे दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ होते हैं लेकिन सभी मुल्कों के कलाकारों के प्रेरणा स्रोत्र समान रहे हैं और जब इस मर्म का भान हमें होने लगता है तो समस्त कला केन्द्रों के हृदय की धड़कन में प्राण फूंकने वाली संजीवनी का पता हम लगा पाते हैं । जिस समवेदना के धरातल पर बैठकर कलाकार साधना में रत रहता है वह अनुभूति भेदों पर विजय पाती है और फिर दर्शकों की दृष्टि पर यह जादू का सा असर डालती है ।

विदेशीय विचारधारा की परम्परा शारीरिक गठन की पूर्णता पर अधिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

केन्द्रित रही है। भारतीय शिल्प ग्रादर्श का मार्ग इससे कुछ ग्रागे रहा है। यहां जिस व्यक्तित्व का दर्शन कराया जाता है उसके मनोभावों ग्रौर विचारों पर ग्रधिक बल दिया जाता है। इसका यह ग्रर्थ कदापि नहीं कि शिल्पियों ने शारीरिक गठन पर ध्यान नहीं दिया। तथ्य तो यह है कि भारतीय शिल्पी की दृष्टि बहुत पैनी ग्रौर वास्तविकता के निकट रही है। उन्होंने कहीं कहीं तो ग्रल्हड़ता को बगैर संकोच ग्रौर लज्जा के प्रदर्शित किया है।

भारतीय शिल्पी ने संताप ग्रौर वासना का चित्रण बहुत कम मात्रा में किया है। उसने तो पवित्रता ग्रौर ग्रपरिग्रहण की भावना से ग्रोतप्रोत मानव ग्राकृतियों को विशेष रूप से रचा है। उसकी कला के चरण धरती पर टिके रहे किन्तु उसकी दृष्टि हमेशा दिव्य लोक की ग्रोर लगी रही। उसकी कला वास्तविकता के निकट रहते हुए, प्रतीकों के सहारे निखरती हुई, उन महान ग्रादर्शों की खोज में रही है जो पार्थिव क्रिया-कलापों से मुक्त थे।

भारत में मूर्तिकला धर्म की संगिनी के समान रही है ग्रौर भारतीय ग्रादर्श कलात्मकता के साथ-साथ धार्मिक भावनाग्रों की ग्रोर विशेष रूप से ग्राकृष्ट रहा है। इसमें सौन्दर्य का निवास रूप में नहीं ग्रपितु गुणों में निहित रहा है। ग्रौर यही एक ऐसा बिन्दु है जहां हमारा वास्तविक भेद विदेशीय कला परम्पराग्रों से रहा है। भारतीय कलाकार के लिये कला सुन्दरतम की खोज मात्र तक ही सीमित नहीं रही है किन्तु यह उसकी उपासना ग्रौर भक्ति का माध्यम बन चुकी थी। शिल्पी को इसके हेतु समर्पित जीवन व्यतीत करना होता था ग्रौर उसे चिन्तन, मनन, ग्रनासक्ति ग्रौर सौम्यता का ग्रभ्यास करना होता था।

भारतीय शिल्पी को इस देश के दो महान धर्मों—हिन्दू ग्रौर बौद्ध ने बहुत प्रभावित किया है। इनसे उन्हें ग्रविरल प्रेरणा मिलती रही है ग्रौर इन्हीं के सहारे ग्रपने ग्रादर्शों ग्रौर विचारों को उसने पत्थरों में सफलतापूर्वक पिरोया है। उनकी कृतियों में भारतीय कला के रूप की महानतम झांकी हमें देखने को मिलती है।

ये शिल्पी पत्थर काटने वाले विनम्र कारीगर थे। वे साधारण जनता के मध्य रहते ग्रौर उसके जीवन के कपट-रहित विचारों ग्रौर ग्रादर्शों को ग्रपने जीवन का पाठ बनाये रखते थे। जिस स्थान पर जैसा पत्थर मिला, उसीमें उन्होंने प्राण भरना ग्रारम्भ किया। कहीं रेत मिश्रित सफेद पत्थर का प्रयोग किया तो कहीं लाल पत्थर का। कहीं सफेद चित्तीदार पत्थर को काम में लिया तो कहीं सख्त भूरे पत्थर का उपयोग किया।

राजस्थान की ग्ररावली श्रृंखलाग्रों में कई भाग ऐसे हैं जहां कई प्रकार के पत्थर उपलब्ध हुए हैं ग्रौर यहां के शिल्पियों ने बड़ी ही कुशलता के साथ ग्रमूर्त को मूर्त रूप दिया है। कई मन्दिरों के खण्डहर ग्रौर उपक्रम ऐसे प्राप्त हुए हैं जिनसे इस प्रदेश की प्राचीनता का पता लगता है। लेखक ग्रपनी लेखनी की सार्थकता केवल बाडोली, जगत ग्रौर राणकपुर के मन्दिरों के वर्णन तक ही सीमित रखता है।

□

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाडोली के मन्दिर

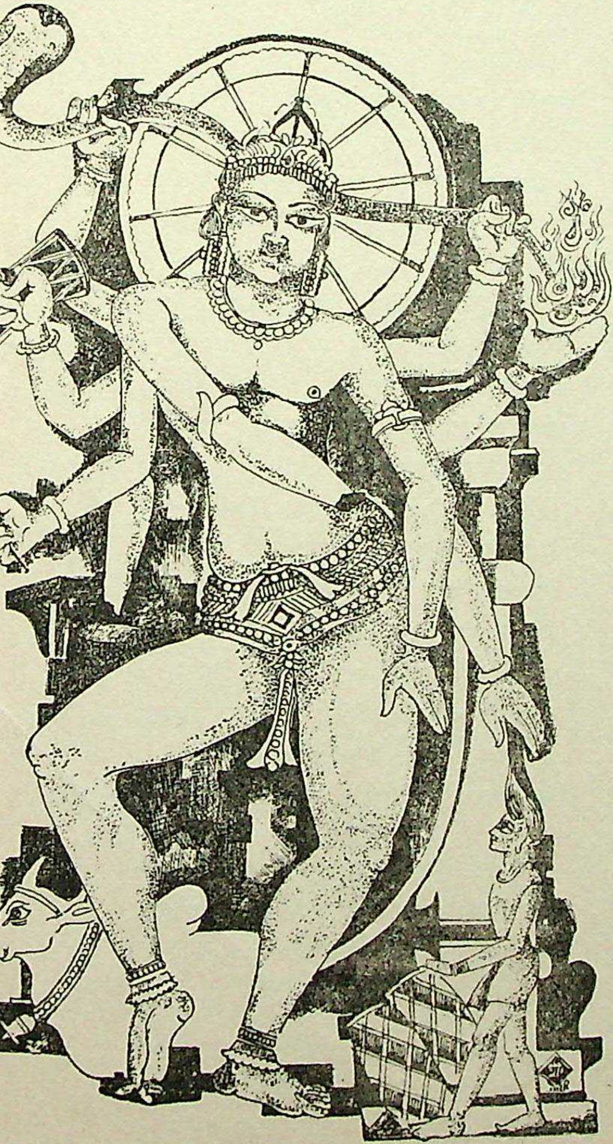

बाडोली के हिन्दू मन्दिर कोटा शहर से प्रताप सागर बांध जाने वाली सड़क पर 30 मील की दूरी पर स्थित हैं। ऊंचे पेड़ों की सघन छाया के मध्य हमें सड़क से कुछ मन्दिर दिखाई देंगे। मन्दिरों के सामने संगमरमर का बना हुआ एक पानी का कुन्ड है जिसमें कुमुदनी के फूल इस स्थान की आभा में चार चांद लगाते हैं। इन मन्दिरों में किसी समय में सुन्दर देव मूर्तियां प्रतिष्ठित थीं किन्तु अब वे कोटा के संग्रहालय में पहुँचा दी गई हैं। कुण्ड के सामने वाले मार्ग से होकर हम एक नाले पर बनी छोटी पुलिया को पार कर उस स्थान पर पहुँचते हैं जहां एक विस्तृत दायरे में फैले बाडोली के सुविख्यात शिव मन्दिर स्थित हैं। इतिहास वेत्ता श्री गौरीशंकर जी ओझा के मत के अनुसार ये मन्दिर सातवीं शताब्दी में निर्मित हुए थे। प्रमुख मन्दिर का विशाल गर्भ गृह, जग मन्दिर के भव्य स्तम्भ और उन पर कुरेदी हुई चित्ताकर्षक देव मूर्तियां दर्शकों को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करती हैं। गर्भ गृह के प्रमुख द्वार के दोनों ओर गंगा और जमुना की सजीव मूर्तियां अपने हाथों में जल पात्र लिये खड़ी मुद्रा में दिखाई गई हैं जिनके रूप माधुर्य की छटा निराली है तथा उनके वाहनों में एक अजीब वेग प्रदर्शित किया गया है। आस-पास के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थानों पर कमल दल से गुंथी हुई बेलों की विभिन्न परिकल्पनाएं ऐसी उभारी गई हैं कि वे शिल्पी की साधना का परिचय अपने आप दे देती हैं। आस-पास के स्थानों, स्तम्भों और छोटे झरोखों में लगभग तीन फीट ऊंची कई ऐसी मोहक और प्राणवन्त मूर्तियां तराशी गई हैं जो भारतीय शिल्प की महिमा की झांकी प्रस्तुत करती हैं। त्रिमूर्ति शिव, कमल की अलंकारिक विधाएं और अवयवों की विविध मुद्राएं ऐसी अंकित की गई हैं जो हमें अजन्ता काल की याद दिलाती हैं। ऐलीफेन्टा और एलोरा की मूर्तियों की विशालता के अतिरिक्त भावनाओं की अभिव्यंजना और रचना की सरलता में समता का आभास हमें यहां दृष्टिगत होता है। साथ ही शक्तिशाली शिल्प के गठन की दृढ़ता का बोध हमें यहां के संयोजनों और मूर्तियों में प्रथम दृष्टि में ही हो जाता है।

जग मन्दिर के सामने के भाग पर एक लघुतोरण इस सजीवता और लयपूर्ण विधि से प्रदर्शित किया गया है जो इस मन्दिर की विशेषता को बढ़ाता है।

जग मन्दिर की बारादरी के ठीक सामने थोड़ा स्थान परिक्रमा के लिए छोड़ दिया गया है। फिर एक अनूठे अष्ट–कोणीय सभा-मण्डप का निर्माण शिल्प की अनुपमता को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिखाने हेतु केवल पत्थरों में ही गूंथा गया है। सभा मण्डप के गोलाकार स्तम्भों के तले हाथियों के सर और सूण्ड को विचित्र गतिशील मुद्राओं में उभारा गया है। पांच फीट की ऊंचाई पर अद्वितीय झरोखे अपनी आभा का प्रदर्शन करते हुए दिखाये गये हैं। ऊपरी भाग में हिन्दू आख्यायिकाओं और पौराणिक कथाओं के आधार पर कुछ प्रसंगों को कुरेद कर यथास्थान आसीन किया है। वर्षा और धूप से बचाव के लिए तिरछे छज्जों को ऐसा पिरोया गया है जो वर्षों से मजबूती के साथ आज भी अटल अवस्था में विद्यमान हैं।

सभा मण्डप के समीप उत्तर दिशा की ओर एक छोटा मन्दिर है जिसमें गणपति की आदम कद से बड़ी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

भगवान शिव के इस विशाल मन्दिर के बाह्य भाग की तीनों दिशाओं में तीन बड़े आल्ये हैं जिनमें शिव के स्वरूपों का दिग्दर्शन बड़ी सजीवता के साथ कराया गया है। इन मूर्तियों की मुद्राएं और भाव भङ्गिमाएं ऐसी लोच और प्रवाह लिये हुए ढंग से निर्मित की गई हैं कि वे एलोरा की गुफाओं में कैलाश मन्दिर में चित्रित शिव के बलिष्ठ स्वरूपों की स्मृति को ताजा किये देती हैं। ऐसा प्रतीत होने लगता है मानो एलौरा के शिल्पियों को यहां से प्रेरणा मिली हो। मन्दिर के आमलक के ऊपरी भाग पर ध्वज दण्ड को दृढ़ता से थामे ध्वजरक्षक अपने गौरवमय अतीत की उज्वल झांकी पेश कर रहा है तथा विजय पताका रुक-रुक कर सरगम सुना रही है।

प्रमुख मन्दिर के दक्षिण की ओर दो और मन्दिरहैं, एक पार्वती जी का और दूसरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति के तीनों मुंह की मुद्राएं, केश विन्यास और जटा आदि का दिग्दर्शन ऐसे कौशल के साथ कराया है कि हमें हमारी शिल्प की सशक्त परम्परा पर गर्व होता है। प्रवेश द्वार की देहली पर अंकित कमल की पंखुड़ियां, कमलनाल, कलियां और झूमते पक्षी इस असाधारण क्षमता और आत्मविश्वास से तराशे गये हैं जो एक दूसरे के कभी ऊपर और कभी नीचे झोल खाते हुए इस मन्दिर की आभा में चार चांद लगाते हैं। बाह्य भाग से जामितिक आकृतियों के आधार पर निर्मित यह सादा और छोटा मन्दिर अपनी समूची कलाविधि प्रवेश द्वार में पिरोये हमारे गौरव का कारण बनता है। भारतीय देवी देवताओं की लघु उभारयुक्त आकृतियां और चित्ताकर्षक अलंकारिक विधाओं के मध्य महान त्रिमूर्ति का दर्शन शिल्पी के चमत्कारिक संयोजन की ओर दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है और एक स्वप्नलोक की सृष्टि में हमें ले जाता है।

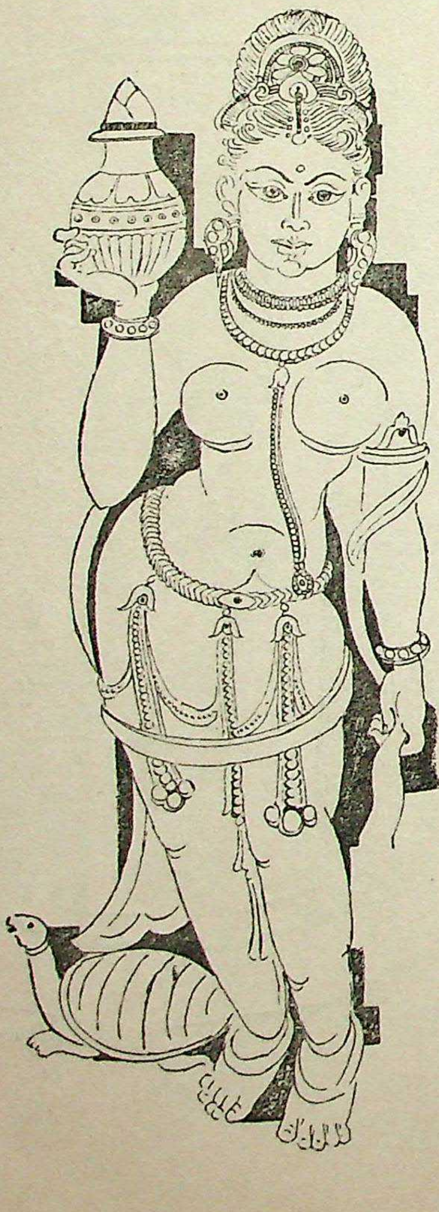

इस मन्दिर के सामने के खुले भाग में भूमि पर रक्खे कुछ खड़े और कुछ लेटे स्तम्भ, तोरण और प्रवेश द्वार इस स्थान के वैभव की कहानी प्रत्येक आगन्तुक को सुनाते हैं। मन्दिरों के भग्नवेश के कई टूटे रत्न यहां एक ढेर के रूप में अपना लिबास छिपाये मूक निद्रा में लेटे पड़े हैं। कैसी अद्वितीय और विशाल रही होगी यहां के मन्दिरों की पावन नगरी। कैसी अलौकिक और स्वर्णिम रही होगी भावनाओं की यह तीर्थ नगरी। चतुर शिल्पियों द्वारा सजाई गई यहां की कला बीथी का वर्णन शब्दों में बांधा जाना सम्भव नहीं। यहां का एक-एक पत्थर स्वयं बोलता है, स्तम्भ बातें करते हैं और दिव्य मूर्तियां अपने गौरवमय अतीत की कहानी स्वयं सुना रही हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक कमरे में सुरक्षित रक्खी चन्द खण्डित मूर्तियां ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं, जिनके केश विन्यासों की विविधता, मुखाकृतियों की भाव भरी अभिव्यंजना और हाथों और पैरों की अद्वितीय मुद्राएं ऐसी सजीव बनाई गई हैं जिन्हें देखते बनता है । गले और कमर के हार और करधनी, कानों के नाना प्रकार के कर्णफूल और वेणी के नीचे गुथे हुए लूमक अत्यन्त आकर्षक और लुभावने तराशे गये हैं । इन मूर्तियों में सादगी और सुन्दरता का इतना श्रेष्ठ संगम अभिनीत किया गया है जो भारतीय उच्च आदर्श और धवल दर्शन का प्रतीक है । छोटे से कमरे में रक्खी इन मूर्तियों को आप घन्टों देखते रहें, तो भी कभी जी नहीं ऊबता और प्रत्येक बार आपको कुछ न कुछ नूतन अनुभूति का भान होगा । आपका इनके साथ इतना गहरा तादात्म हो जाएगा कि आप भूल बैठेंगे कि आप कहां हैं ! आपकी हृदय कलिका इनकी सुवास के स्पर्श से खिल उठेगी और ऐसा अनुभव होगा कि ये चिर-स्मरणीय क्षण आपके जीवन में हमेशा के लिए बने रहें । ऐसा है यहाँ की इन भग्न मूर्तियों का विलक्षण जादू जो द्रष्टा के हृदय पर अपना प्रभाव डाले बगैर नहीं रह सकता । □

5810

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

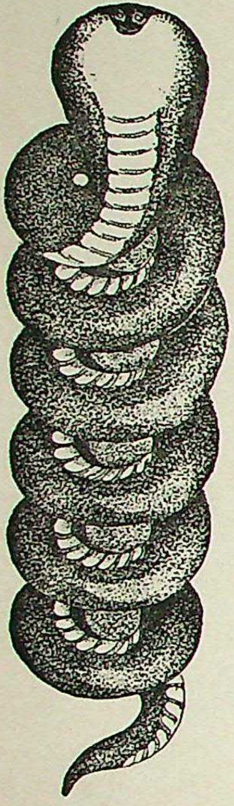

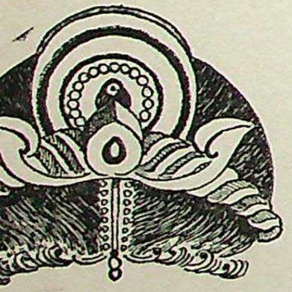

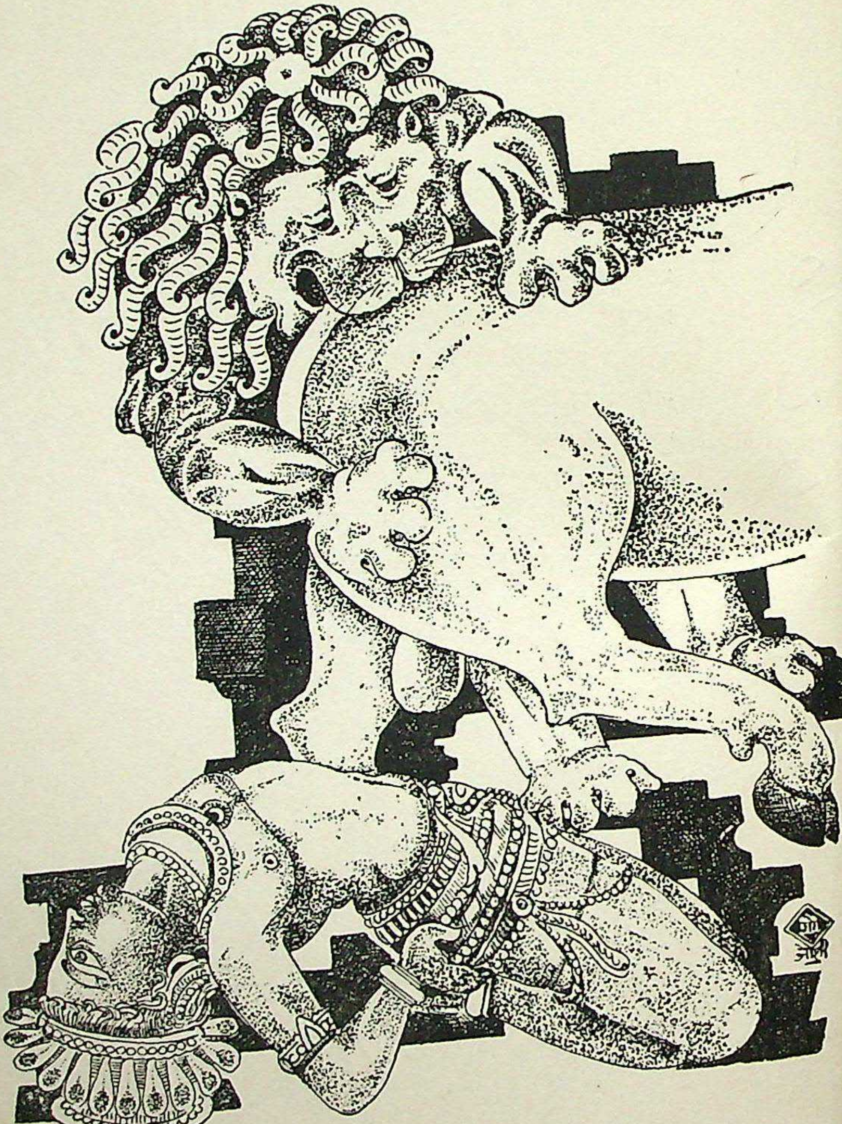

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

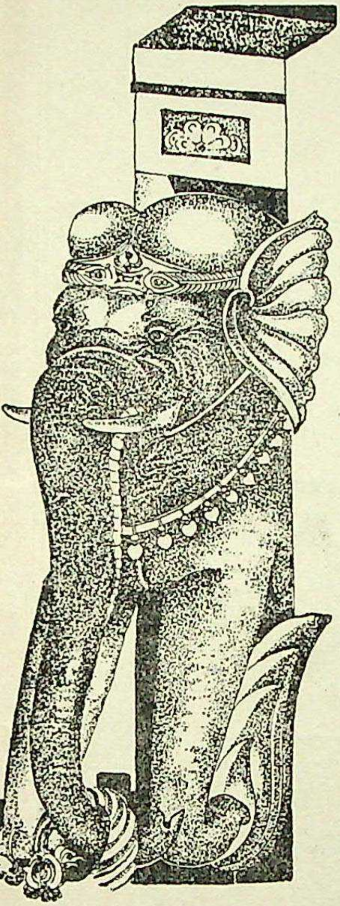

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

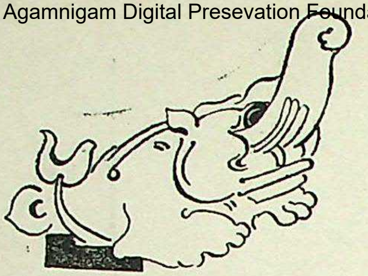

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

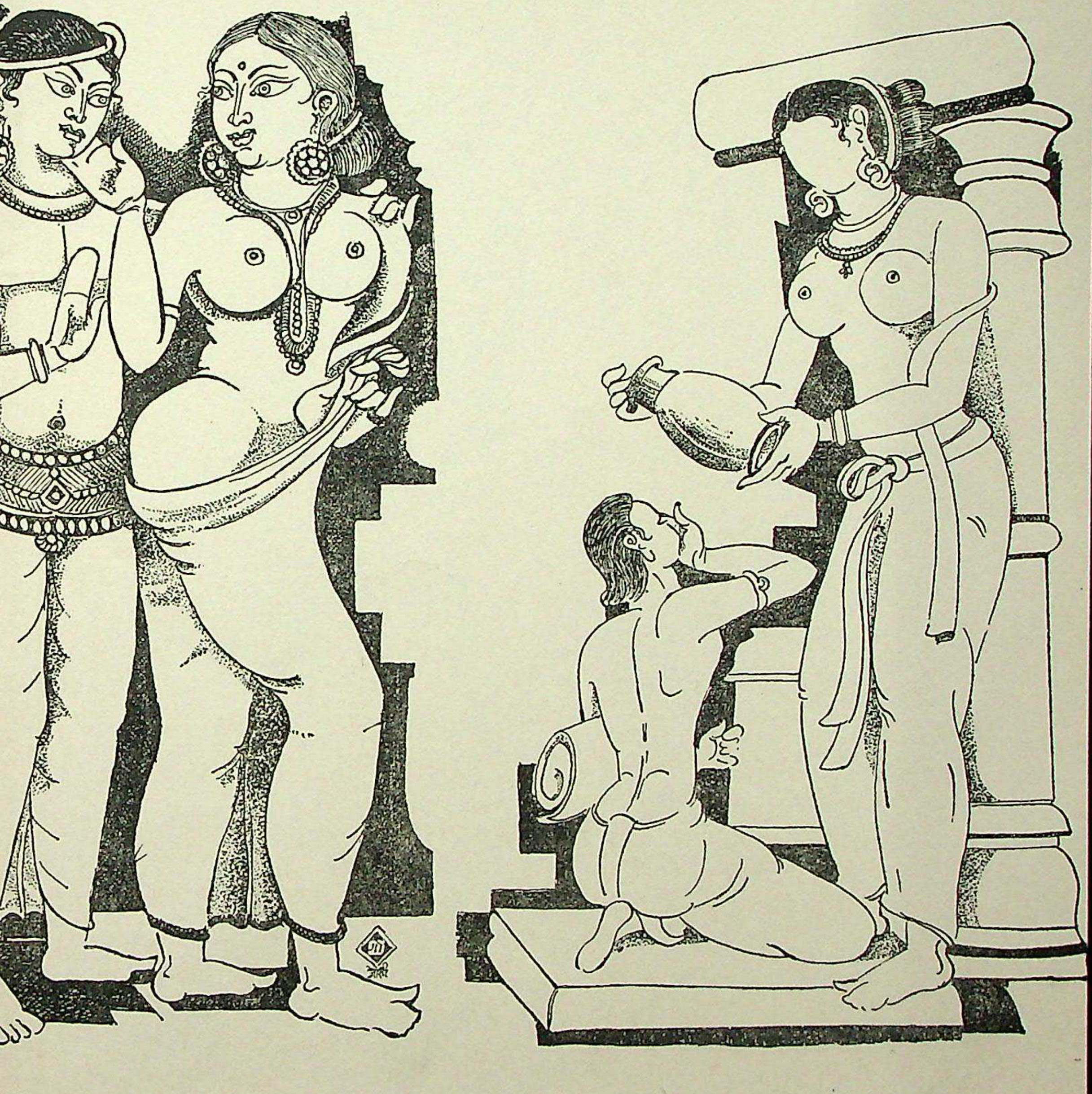

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जगत में अम्बा माता का मन्दिर

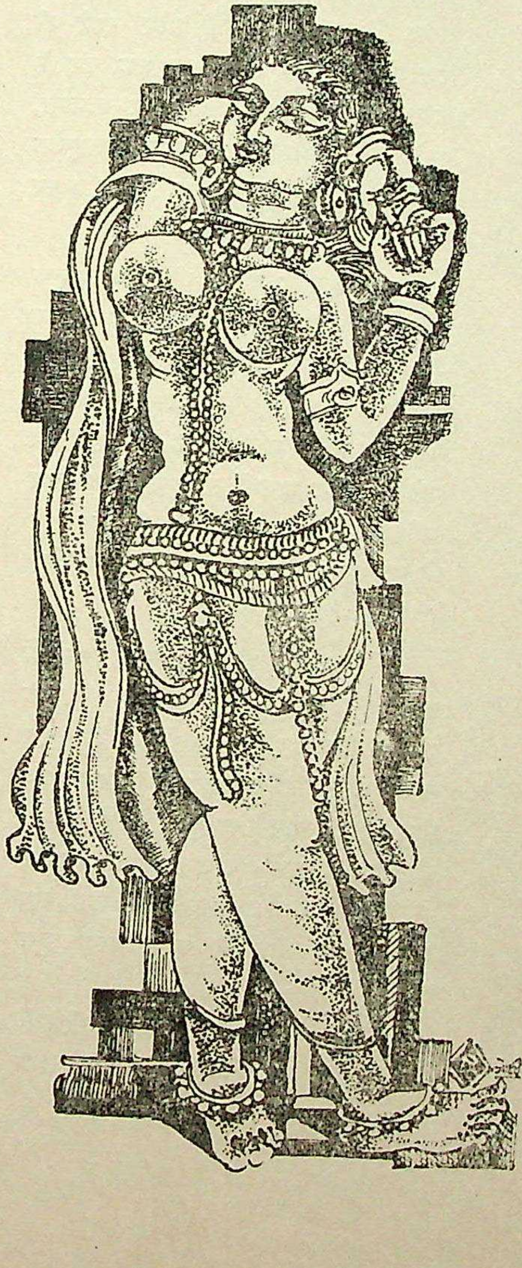

दसवीं शताब्दी में निर्मित माता अम्बिका का यह मन्दिर उदयपुर शहर से कुराबड़ बस रूट द्वारा सैंतीस मील के फासले पर स्थित है। यह मन्दिर मेवाड़ प्रदेश के गुहिक वंशीय राजा अलाटा व उनके पुत्र नरवाहन के काल में वालुका के पुत्र सवांपुरा ने बनवाया था। इसकी पुष्टि सभा मण्डप के स्तम्भ पर अंकित एक लघु लेख से होती है जिसमें स्पष्ट रूप से विक्रम संवत् 1017 (960 ए. डी.) लिखा गया है।

यह मन्दिर आसपास की पहाड़ियों में उपलब्ध होने वाले सफेद रेतीले पत्थरों द्वारा निर्मित किया गया है। मन्दिर के पास से होकर जाने वाली सड़क की सतह से यह लगभग 8 फीट नीचे बना हुआ है और इसका घेराव काफी विस्तृत है।

इस मन्दिर का प्रवेश मण्डप पूर्व दिशा की ओर मुंह किए हुए है और इसकी बाह्य दीवार ठोस बड़े पत्थरों से व्यवस्थित रूप से बनी हुई है। प्रवेश मण्डप से प्रमुख मन्दिर तक की दूरी लगभग 56 फीट की है।

प्रवेश द्वार के सामने के चौकोर भाग पर की छत पर अनेक प्रकार के सुन्दर अलंकरण अंकित हैं जिसमें विशेष वर्णन करने योग्य रथ पर आरूढ़ देवता और अश्वों की लयपूर्ण गति का अंकन है—साथ ही गोलाकार खम्भों पर कमल के आकर्षक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

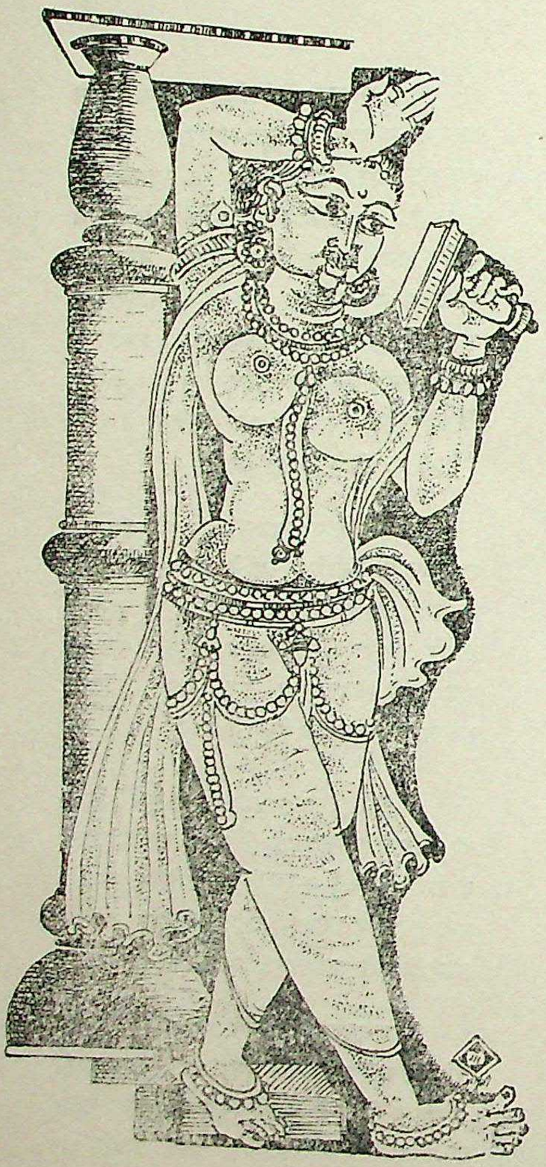

अलंकरण अपनी सुन्दर आभा का परिचय दे रहे हैं। प्रवेश द्वार के अन्दर के भाग में अनेक दिग्पालों, किंजरों और पक्षी की कक्षाओं का बोध बड़े कलात्मक ढंग से कराया गया है। स्थानों का सुन्दर बटवारा, संयोजन की कुशल एकता और दृढ़तापूर्वक अवयवों का घुमाव दृष्टांक हृदय पर असर डाले बिना नहीं रह सकता।

प्रवेश द्वार के दोनों ओर लघु मातृक और चतुर्भुज बाराही की मूर्तियां अंकित की गई हैं। खम्भों पर कीर्तिमुख और कमलों की लयपूर्ण परिकल्पनाएं अपनी अपनी आभा का परिचय देते हुए दृष्टिगत होते हैं। मध्य भाग में समुद्र मंथन का दृश्य सजीव ढंग से तराशा गया है जिसमें शिव की नृत्य मुद्रा अद्वितीय कौशल का परिचय दे रही है।

पश्चिम दिशा की ओर का भाग सम्पूर्ण रूप से खुदा हुआ है जिससे प्रमुख मन्दिर के दर्शन भली प्रकार किये जा सकते हैं। इस स्थल से प्रमुख मन्दिर की दूरी लगभग 56 फीट की है। सामने का खुला चौक मन्दिर की आभा में चार चांद लगा रहा है। सुनियोजित योजना का एक सुन्दर उदाहरण हमारे समक्ष जगत के ये मन्दिर प्रस्तुत करते हैं।

विस्तृत खुले आंगन से सटी हुई सीढ़ियों से होकर सभा मण्डप में प्रविष्ट होते हैं। सभा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

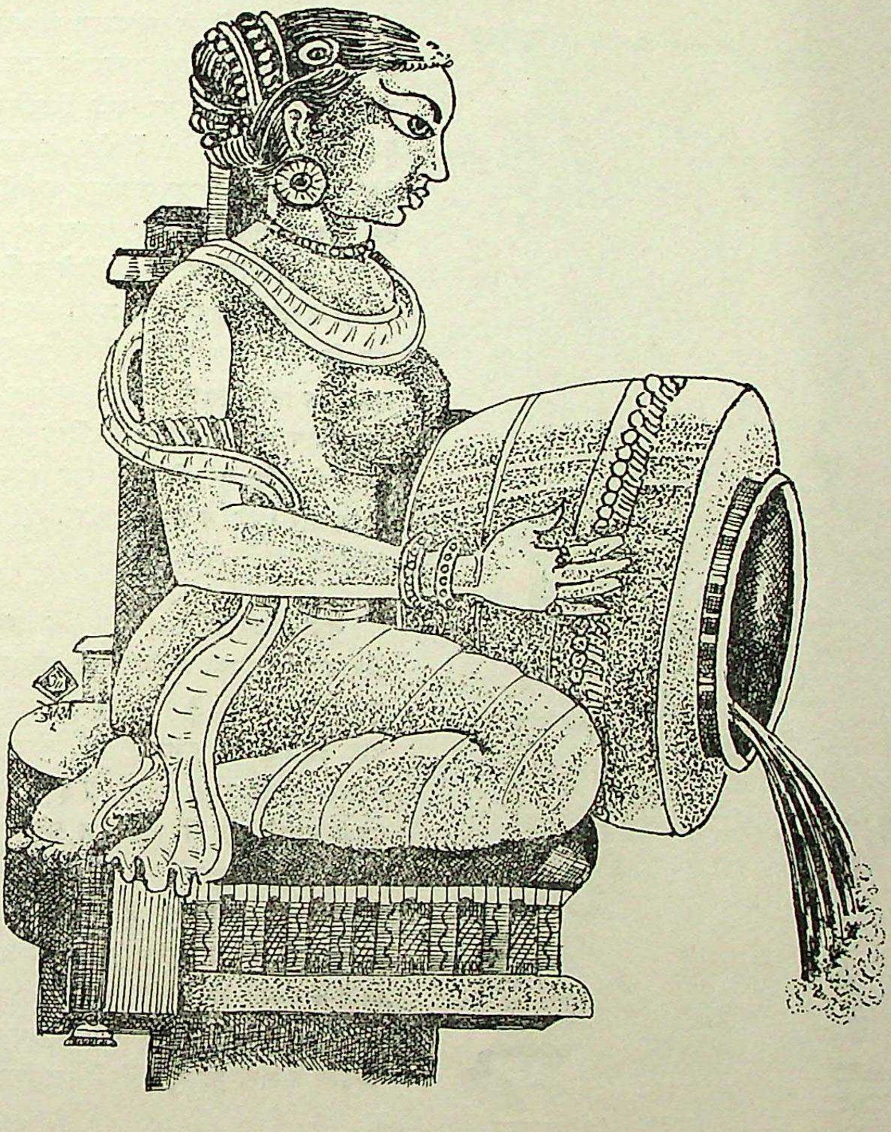

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

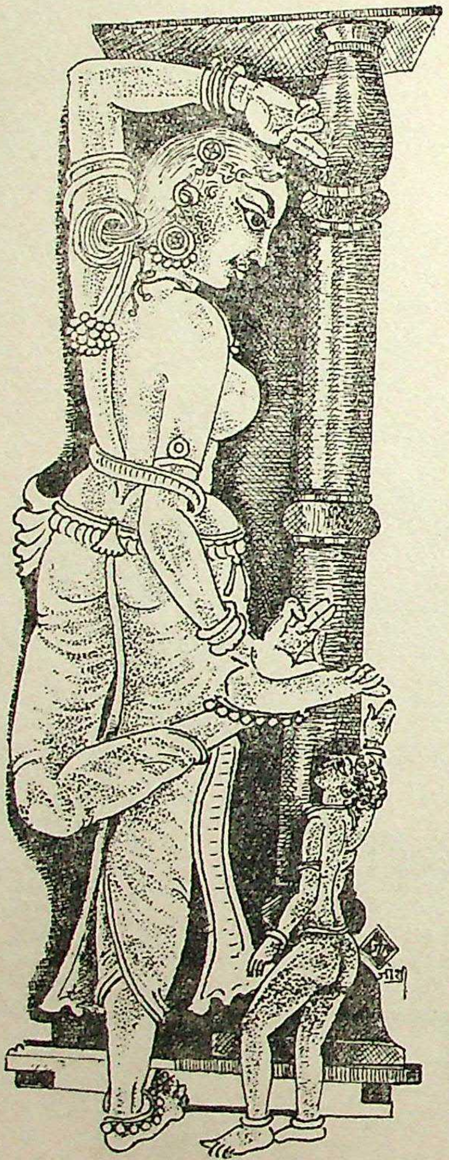

मण्डप चार गोल स्तम्भों पर, जिनका आरम्भ का भाग अष्टकोणाकार है, आधारित है। इन खम्भों की ऊँचाई लगभग 11 फीट की है और इन पर फूलों के अलंकरण आकर्षक रूप से खोदे गए हैं। सभा मण्डप के उत्तरी और दक्षिणी भाग में बड़ी-बड़ी खिड़कियां हैं। प्रमुख द्वार के दोनों ओर के खम्भे शिल्प के अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। देवी चावुण्डा मृत मानव पर आरूढ़ अपर्ण गले में रुण्डों की माला धारण किये प्रदर्शित की गई हैं और छावने के ऊपरी भाग पर गणपति और शिव की मूर्तियां हाथों में वाद्य यन्त्र लिए दिखाई गई हैं। गर्भगृह के मध्य भाग में महिषासुर मर्दिनी माता अम्बा की मूर्ति है जो अपने एक हाथ में खप्पर और दूसरे में भैंसे का सर लिए हुए सुशोभित है।

सभा-मण्डप और गर्भगृह के अन्दर और बाहर की सभी मूर्तियां और अलंकरण सुरक्षित अवस्था में हैं। मन्दिर का आमलक और शिखर, जो लगभग 40 फीट की ऊँचाई का है, अच्छी अवस्था में है। गर्भ-गृह के बाहरी भाग में कीर्तिमुख और गज-पीट की गहरी खुदाई की पंक्तियां अपनी निराली आभा लिये हुए हैं। इससे ऊपर की पंक्तियों में अलंकारिक जामेतिक आकृ-तियों के साथ यथाविधि परिक्रमा गृह में निम्नांकित मूर्तियां अपने पूर्ण यौवन और उल्लास से खड़ी हुई मुद्राओं में प्रदर्शित की गई हैं।

क—गज पर आरूढ़ खड़ी मूर्तियां—संख्या–8

ख—दिग्पाल की मूर्तियां—संख्या–6

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

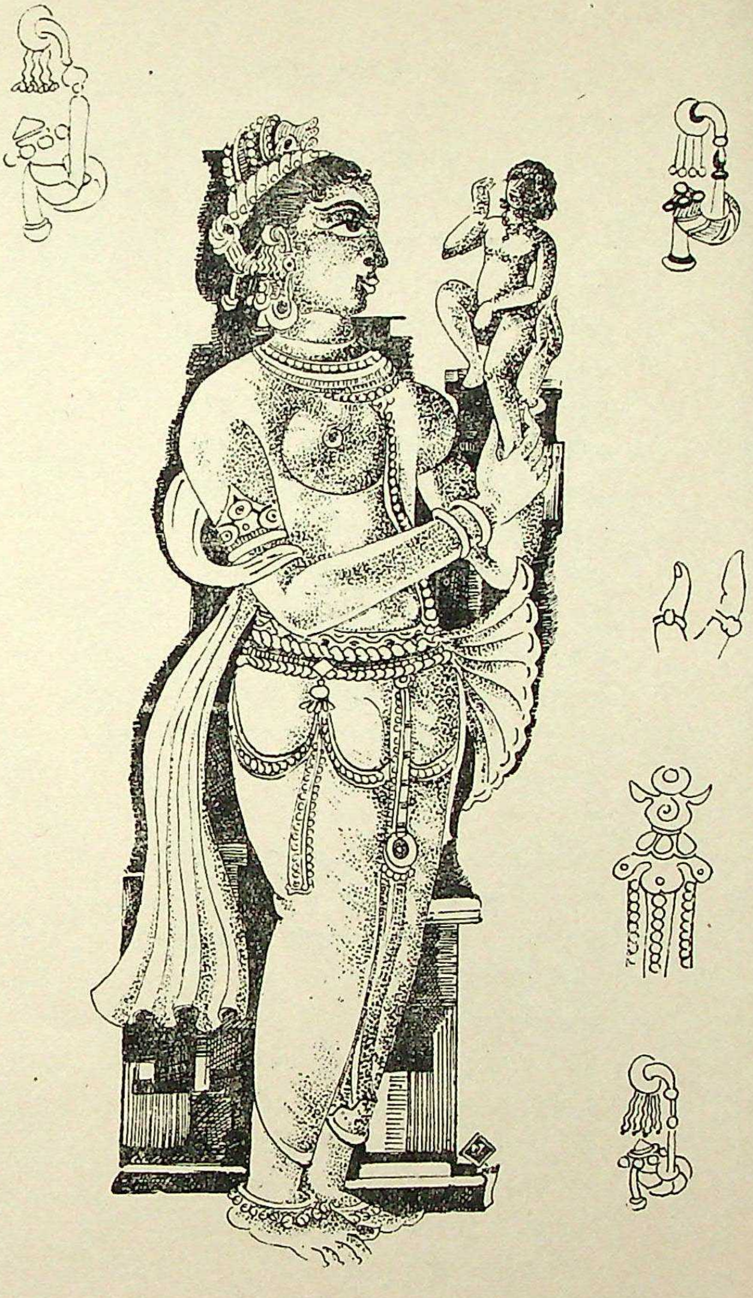

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग—सिंह की लयपूर्ण मूर्तियां — संख्या—10

घ - मातृक मूर्तियां — संख्या 38

उपरोक्त मूर्तियों के अलावा सभा-मण्डप के बाहर की ओर के ऊपरी भाग में अनेक देवी मूर्तियां तराशी दिखाई गई हैं जो अपने हाथों में चंवर-त्रिशूल, घन्टी, पुस्तक, पात्र, गदा, कटार, खड़्ग, ढाल, पाश, वीणा, मजीरे, बान्सुरी, तलवार और मुण्ड आदि धारण किए हुए हैं तथा ये खड़ी हुई मुद्राओं में दिखाई गई हैं। इनके साज श्रृंगार और वेशभूषा के बारीक अलंकरण अत्यन्त सावधानी और चतुराई से निर्मित किये गए हैं। वीणा वादिनी सरस्वती के अंग-प्रत्यंग की सुहावनी छटा और इनके वस्त्रों की फहरान, लय और ताल की सुरम्य झांकी प्रस्तुत करती है। कई मूर्तियां विविध प्रकार की आकर्षक नृत्य मुद्राओं में अंकित की गई हैं। कोई अपने कोमल हाथो से चंवरी हिला रही है तो कोई मजीरे वादन की धुन में तन्मय हो रीझ रही है। कोई केश विन्यास की अलौकिक झांकी प्रस्तुत करने में लीन है तो कोई अपने पैर में लगे कांटे को निकालने को चेष्टा में लगी हुई है। कोई देवी दर्शन को अपने हाथों में मंगल कलश लिये घर से चल पड़ी है तो कोई वात्सल्य रस में डूबी अपने बच्चों को खिला रही है। कोई वेणु वादन में लगी हुई है तो कोई नृत्य सृजन की धुन में अपने आपको भुलाये हुए है।

मन्दिर के बाह्य भाग में दिग्पालों की सजीव मूर्तियां दृष्टिगत होती हैं जो चारों दिशाओं में अपना मुँह किए हुए इस प्रकार स्थित हैं —

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

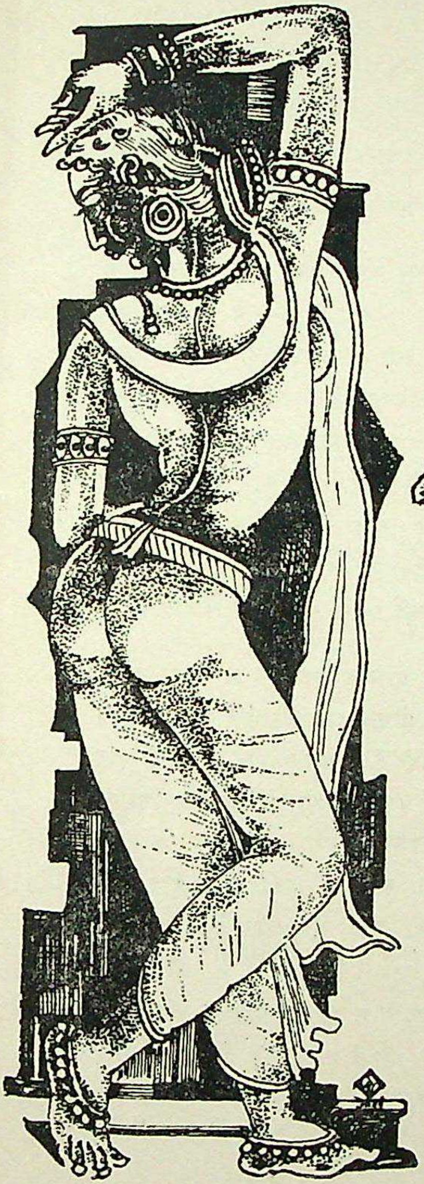

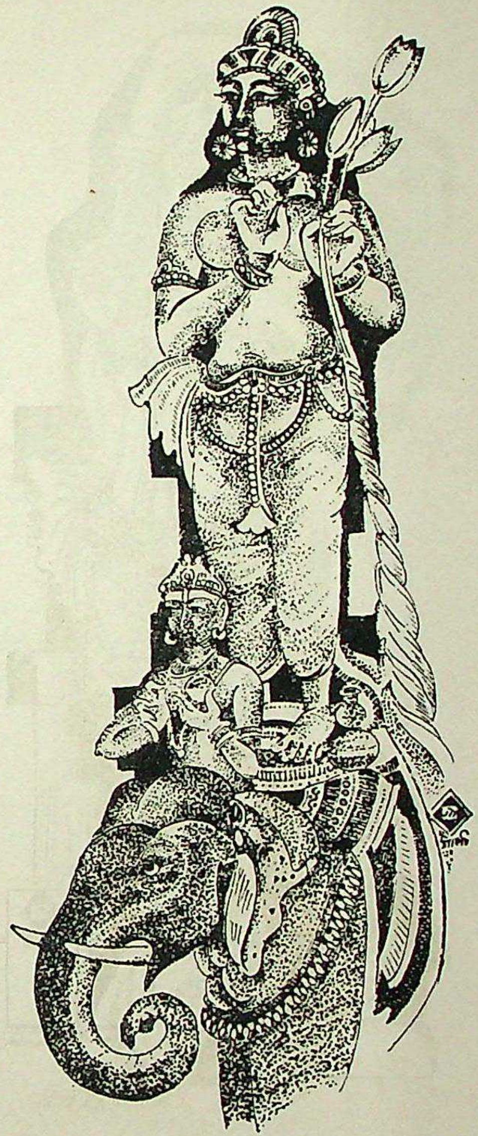

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

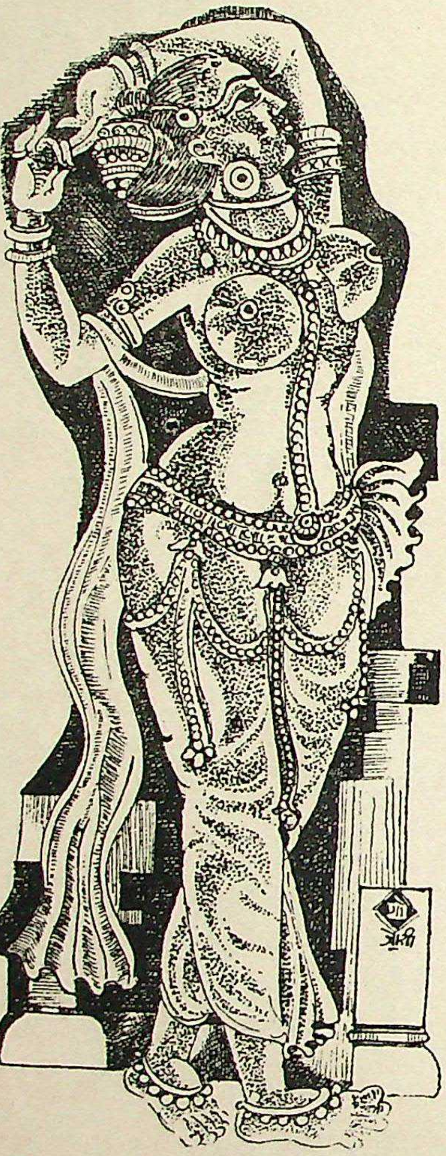

यम और अग्नि—दक्षिण दिशा की और ।
कुबेर और वायु—उत्तर दिशा की ओर ।
वरुण और सुमेर– पश्चिम दिशा की ओ ।

यदि हम सभा मण्डप को दाहिने हाथ की ओर से परिक्रमा लगा दें तो हमें सर्व प्रथम एक देवी नरमुण्डधारी असुर को वध करती हुई दिखाई देगी जिसके पीछे से सिंह ाक्षस पर झपटता दिखाया गया है । देवी अपने गले में नरमुण्डों की माला धारण किये हुए है तथाइसके चेहरे पर तेज चमक रहा है । देवी के हाथों के शस्त्र राक्षस के खून से अपनी प्यास बुझाने में संलग्न हैं।

इसके आगे के भाग में सरस्वती अपने हाथों में वीणा और पुस्तक थामे सौम्य मुद्रा में खड़ी हैं । तनिक और ाअगे बढ़ने पर एक देवी अपने हाथों में खड्ग, त्रिशूल, वरदक्षा. डमरू, नाग और कुण्ड लिये हुए शक्तिशाली रूप से खड़ी हुई है । इसी प्रकार बायें हाथ की ओर देवी चावुंडा, दुर्गा और पार्वती विविध प्रकार की मुद्राओं में खड़ी अपनी अपनी शक्ति और कौशल का परिचय दे रही हैं तथा साथ ही ये प्राचीन शिल्प कौशल का अद्भुत परिचय भी देती हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

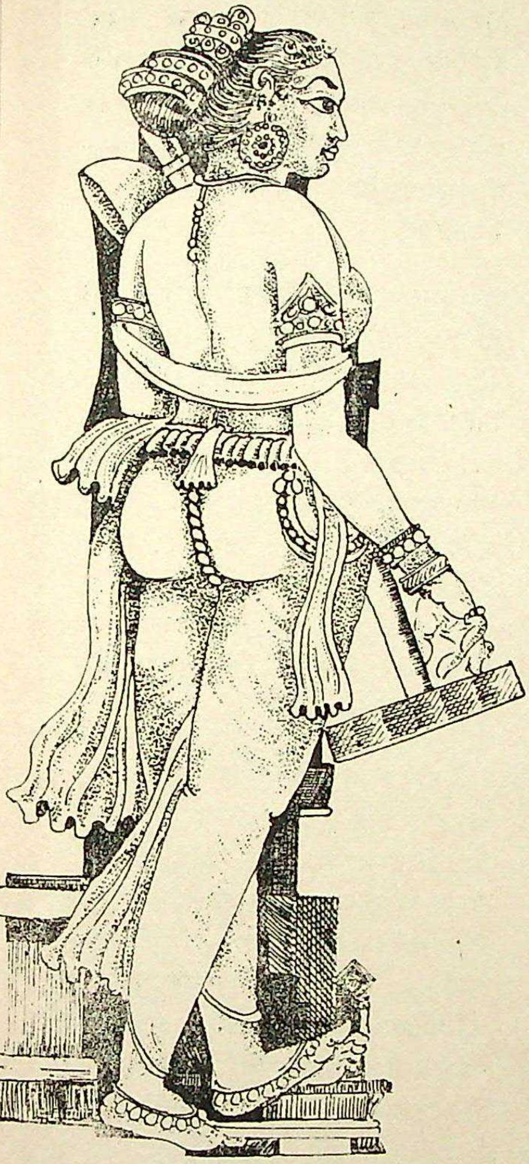

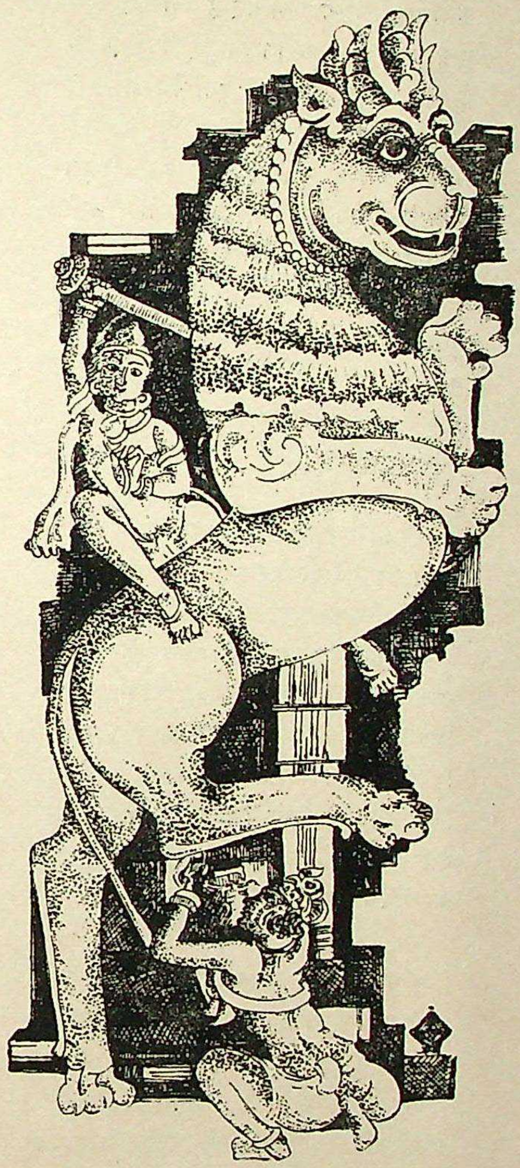

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रमुख मन्दिर की तीनों दिशाओं में तीन कलात्मक आल्ये रखे गए हैं जो दीवार से कुछ आगे की ओर निकले हुए दिखाये गये हैं। इनमें अष्ट भुजा देवी दुर्गा भैंसे का संहार करती हुई प्रदर्शित की गई है। पौष्टिक मांस पेशियों की सजीवता और वेग, त्रिशूल और खड्ग की तनाव भरी त्योरियां, घन्टी का गर्वपूर्ण विजय निनाद और हाथ में राक्षस के मुण्ड का रुदन एक अजीव **तान्त्रिक सुसिष्ट** की रचना का हमें बोध कराते हैं। महिष मर्दिनी के स्वरूप का ऐसा महत्वपूर्ण अंकन हमारे गौरवमय अतीत की सुनहरी झांकी बताता है।

यहां एक विशेष बात यह ध्यान में रखने की है कि हमारे समाज में देवी अम्बा के प्रति कितनी अटूट आस्था थी। जगत में स्थित इस अम्बा माता के मन्दिर के बाहरी भाग में कहीं भी हमें ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्तियां नहीं मिलती हैं। इसके विपरीत मां अम्बिका के विविध स्वरूपों की चित्ताकर्षक झांकियां हमें अनेक बार दृष्टिगत होती हैं जिनका रूपांकन हस्तलाघवता का परिचायक है।

सभा मण्डप के बाहरी भाग में उत्तर और दक्षिण दोनों दिशाओं की ओर निर्मित जालीदार खिड़कियां इस मन्दिर की शोभा में चार चांद लगाती हैं। गर्भगृह में प्रतिष्ठित माता अम्बिका को स्नान कराने के फलस्वरूप जो पानी बहकर बाहर की ओर जाता है उसके लिये एक छोटा होज बाहर की ओर निर्मित किया गया है तथा यह पवित्र जल एक सुन्दरी द्वारा थामे हुए घट में से होकर बाहर जाता है। राजस्थान में स्थित अन्य स्थानों के किसी मन्दिर में इस प्रकार की कलात्मक व्यवस्था हमें नहीं देखने को मिलती।

प्रमुख मन्दिर की शेष दीवारों से थोड़े बाहर की ओर निकले हुए कतिपय आल्ये इतने आकर्षक और रोमाँचकारी ढंग से निर्मित किये गये हैं जो एक अबाकिद दृश्य उपस्थित करते हैं और जो स्वयं में शिल्प के सुन्दर नमूने प्रतीत होते हैं। इनमें प्रतिष्ठित शक्ति और साधना की देवी सिंह वाहिनी और महिषासुर मर्दिनी के भव्य रूप, जातिमान वस्त्राभूषणों के सफल अंकन का यशस्वी योग शिल्पी की अनुभूति का बोध स्वयं करते हैं।

मन्दिर के अनेक आकर्षक स्थलों पर अंगड़ाई लेती हुई सुन्दरियां ऐसे मोहक ढंग से तराशी गई हैं कि इनके निखरे हुए यौवन की अमिट छाप हृदय पटल पर पड़े बिना नहीं रह सकती। सफल शिल्पी के ये कीर्तिमान युग युगान्तर तक भारतीय गौरव गरिमा की धवल कीर्ति प्रस्तुत करते रहेंगे और कलावन्त की छेनी और हथोड़ी के जादू के आनन्द की याद हमें दिलाते रहेंगे।

□

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राणकपुर

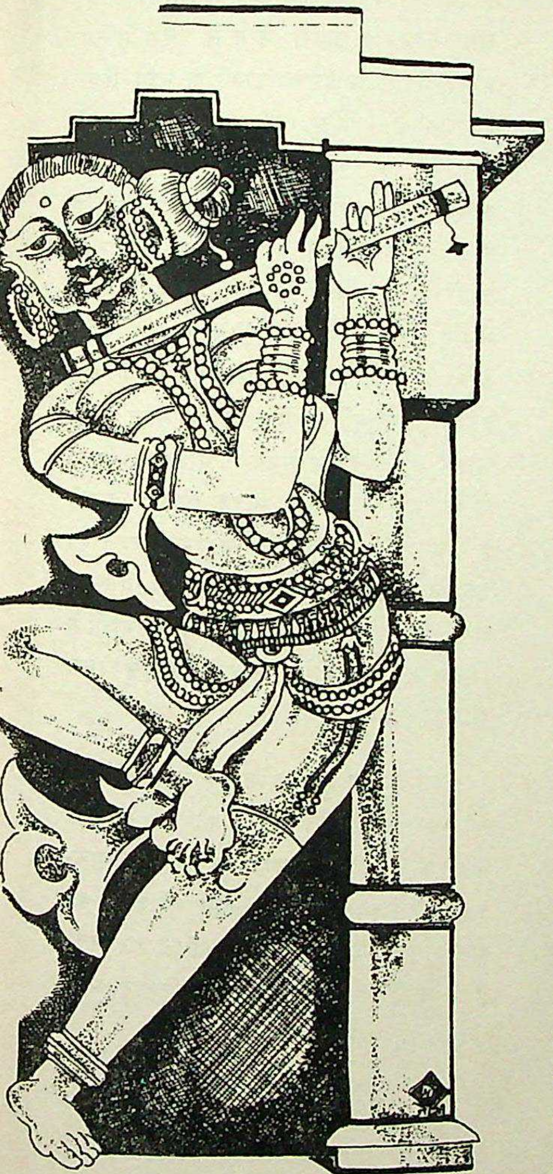

राजस्थान के इतिहास में महाराणा कुम्भा का समय शौर्य, समृद्धि और कला के चतुर्दिक विकास का महान काल कहा जा सकता है। इनसे प्रेरणा ग्रहण कर मन्त्रियों और विशिष्ट जैन और हिन्दू परिवारों ने कई भव्य मन्दिर बनवाये। पोरवाल परिवार के धर्मानुरागी धन्नाशाह और रत्नाशाह द्वारा निर्मित राणकपुर का मन्दिर इसकी एक अनूठी मिसाल है। यह मन्दिर उदयपुर से करीब 55 मील की दूरी पर उत्तरी अरावली गिरि शृंखला के ढ़लाव की सुरम्य घाटियों में स्थित है। प्रमुख मन्दिर में चतुर्मुख ऋषभदेव की मूर्ति स्थापित है। इस मन्दिर में कई शिला लेख हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण 8 फुट 3 इन्च लम्बा और 1 फुट 1 इन्च चौड़ा, चौरस संगमरमर का शिला लेख है। यह शिलालेख प्रमुख प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर लगा है। इस पर गद्य रूप में संस्कृत की 46 पंक्तियां अंकित हैं। यह शिलालेख उदयपुर राज्य वंश के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है और बहुत प्रामाणिक माना जाता है। इस चौमुखे ऋषभनाथ के मन्दिर को 'त्रैलोक्य दीपक' का नाम भी दिया गया है। इसे दीपा नामक सोमपुरा, ब्राह्मण शिल्पी ने योजनाबद्ध किया और उसी की कुशल देखरेख में सन् 1438 में इसका निर्माण आरम्भ हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

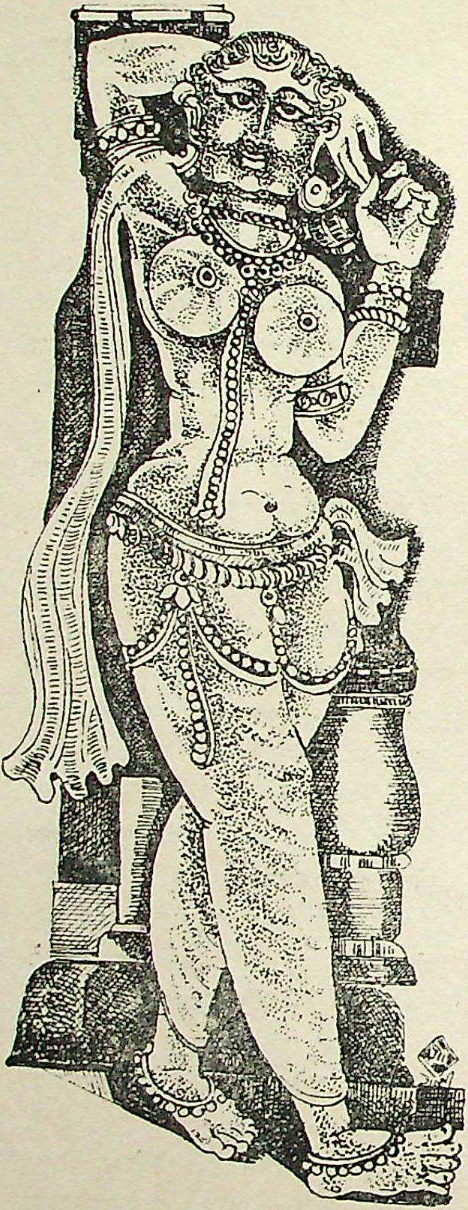

मुख्य मूर्ति के प्रवेश द्वार के सामने के भाग को मुख मण्डप कहते हैं जिसकी शोभा तोरण द्वार से खिल उठी है तथा यह सामने के विशाल सभा मण्डप से जुड़ा हुआ है। इस सभा मण्डप के ऊपरी भाग में अनेक मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं जो प्रमुख खम्भों के मध्य स्थित हैं तथा वे खड़ी मुद्रा में वाद्य की धुन में लीन हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानों भगवान् ऋषभदेव को ये चिरंतन संगीत की लय में लीन रखना चाहती हों। मूल मन्दिर के चारों ओर मण्डप हैं जो मुख्य द्वार के सामने वाले मण्डप से छोटे हैं तथा चारों ओर देव कुलिकाएं विभिन्न मुद्राओं में बनी हुई हैं। इन मूर्तियों के शारीरिक गठन, हाव-भाव और भाव-भंगिमाएं भारतीय शिल्प के आदर्शों की अन्तिम झलक प्रस्तुत करती हैं। दर्शक इन्हें घण्टों निहारते रहने का इच्छुक रहता है। वह मन्त्र मुग्ध हो विचारने लगता है कि किस पावनता और भक्ति से शिल्पी ने इन कठोर पत्थरों को सुकोमल और लचीला बनाया है।

मन्दिर के मुख्य मण्डप के उत्तर पश्चिम की ओर प्रतिष्ठित मूर्ति को देव कुलिका कहते हैं तथा उत्तरी मण्डप के सामने राणक-स्तम्भ है जिसकी अद्भुत नक्काशी दर्शक को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। दाहिनी ओर पवित्र गिरिनार और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

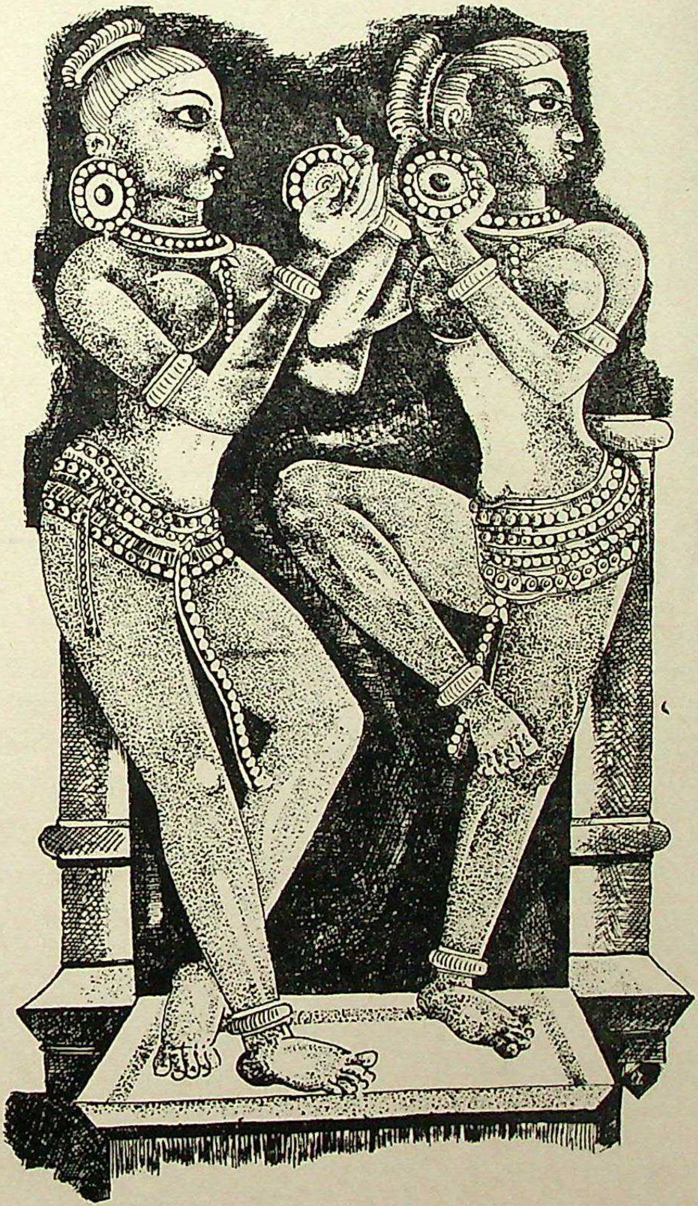

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शत्रुन्जय की पहाड़ियां उत्कीर्ण की हुई दिखाई गई हैं तथा सहस्र कूट का चित्र भी यहीं अंकित है। आदिनाथ की देव कुलिका मूर्ति के दूसरी ओर सहस्त्र–फण पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है जिसे एक ही पत्थर पर कलाकारों ने बड़ी चतुराई और अद्भुत शिल्प कौशल दिखाते हुए अंकित किया है।

इस मन्दिर का बाहरी भाग अलंकृत नहीं है जिसे स्थापत्य कला की दृष्टि से दोष युक्त समझा जा सकता है किन्तु भारतीय और जैन दर्शन में हमेशा अन्दर की पवित्रता पर आग्रह अधिक रहा है और फिर बाहरी भागों को मौसमों के परिवर्तित स्वरूप का चिर काल तक सामना करना होता है। इसी हेतु बाहरी भाग ठोस और कम अलंकृत रक्खा है।

इस मन्दिर की प्रमुख विशेषता इसके रचना सौन्दर्य में है। किसी भी स्थान से देखिये भगवान के दर्शन आगन्तुक को हो जाते हैं। अनेक विशाल स्तम्भों की पंक्तियों के साथ ही साथ छोटे-छोटे स्तम्भों का ऐसा सुघर सामन्जस्य बिठाया है कि एक अद्भुत लोक की झांकी का आभास होने लगता है। प्रत्येक स्तम्भ का अपना निजत्व है, उसकी अपनी अलंकारिक छटा है। यह विशाल तिमंजिला मन्दिर 48 हजार वर्गफुट के क्षेत्रफल में बना है। इसके निर्माण में दो प्रकार के पत्थरों का प्रयोग हुआ है। एक 'सेवादी', जिसे मन्दिर की नींव भरने और भूमि पर के विशाल चबूतरे को बनाने में काम में लिया गया है तथा दूसरा 'सोनाना' जिसके द्वारा मन्दिर के अन्य भाग बनाकर तैयार किये गये। मन्दिर का शिखर इंटों द्वारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

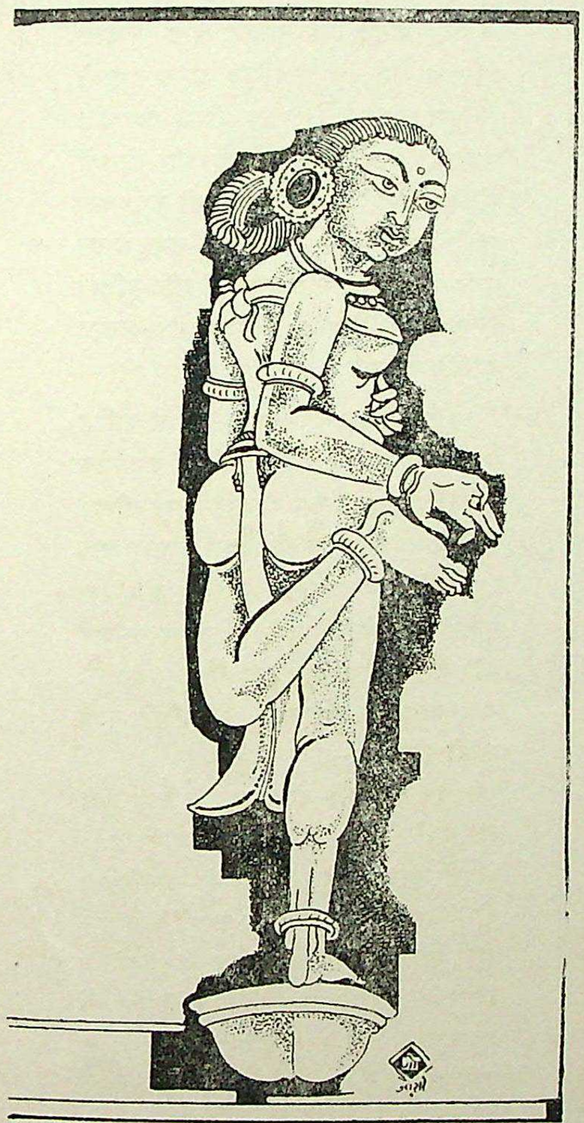

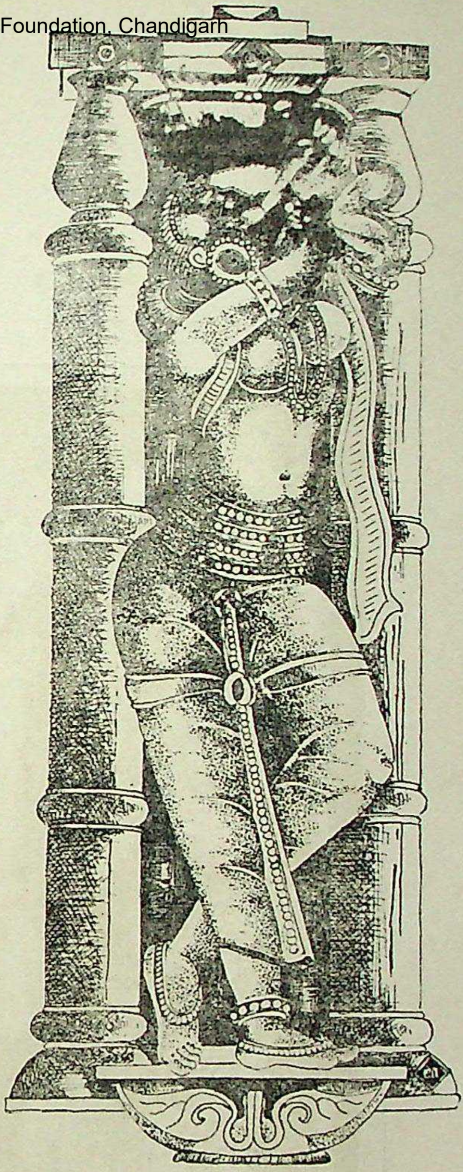

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनाया गया है तथा कुछ विशिष्ट मूर्तियां बाहर से लाये गये पत्थरों द्वारा निर्मित हुई हैं।

मूर्तिकला की दृष्टि से यह मन्दिर अनूठा है। इसमें अनेक देवी देवता, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, वानर, नृत्य मण्डली, वाद्य मण्डली और जैन धर्म पर आधारित अनेक कथाओं का सुन्दर ढंग से निरूपण किया गया है। प्रवेश द्वारों की अलंकारिकता और तोरणों की सुमधुरता विशेष आकर्षण की केन्द्र बनी हुई है। नाल मण्डप–कल्प वृक्ष, सभा मण्डप आदि पर अंकित परिकल्पनाएं और मूर्तियां अनायास ही जिज्ञासु हृदय में नव–प्रेरणा का संचार करती हैं।

सभा मण्डप के स्तम्भों पर आधारित वाद्य यन्त्रों की धुन में लीन कतिपय कलात्मक मूर्तियाँ गोलाकार रूप में अपने पूर्ण सौन्दर्य और आभा से मण्डप की शोभा में चार चांद लगा रही हैं। इन सजीव और प्राणवन्त मूर्तियों के वर्णन के बगैर शिल्पी के कौशल और करामात का पता नहीं लग सकता। अतः प्रस्तुत है इनके रेखा चित्रों की सूक्ष्म झांकी। यह है:–

वेणु वादिनी:–गोल चेहरे के मध्य लंबी नासिका कैसी कुरेद कर निकाली है। तिरछी भृकुटी ने मुख मण्डल की सम्मोहकता को विशेष रूप से आकर्षक बना दिया है। होठों पर टिकी वेणु ने कोमल अंगुलियों के इशारे पर सरगम छेड़ दिया है। चिबुक की बनावट में शिल्पी ने अधिक होशियारी से काम लिया है। लम्बी गरदन की सलवटें साधना के स्तरों का बोध कराती हैं तथा छिपे राग का खुलासा भरे कपोलों के पास की तिरछी रेखा स्पष्ट करती है। सशक्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संयोजन की मधुर रेखाओं से बंधी हुई कटि और जघाएं दर्शक के मन को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होती हैं। लचीली भुजाओं के घुमाव और पैरों की प्राणवान थिरकन हृदय की धड़कन में नये संगीत का रस उड़ेलती हैं। शरीर के अवयवों की विभिन्न मुद्राएं रोम-रोम में प्रसन्नता की रेखाएं खींचने में समर्थ होती हैं। कर्णफूल, गले के हार और कर्धनी अपना-अपना स्वर वेणु के साथ मिलाते दृष्टिगत होते हैं और कन्धों पर का वस्त्र लय की तान में लीन हो झूमने लगता है। कितनी सौष्ठवता और सौम्यता का वातावरण इस भक्ति में डूबी नारी ने उत्पन्न कर दिया है और इस जादू का रचयिता है विनम्र शिल्पी।

ढोलक पर ताल:—प्रसन्न मुद्रा में अपने जूड़े को बांधे पैरों को मजबूती से धरत्ती पर टिकाये ढोलक पर आत्म विश्वास से ताल देती हुई यह मूर्ति दर्शक की अन्तरध्वनि के साथ तादात्म्य साध रही है। पत्थर की सतह पर इस प्रकार का गतिशील पिण्ड अंकित करने में कलाकार ने कैसी चतुराई दिखाई है। अपने जीवन की गहरी साधना के फलस्वरूप निर्जीव पत्थर में प्राण फूँक दिये हैं। कैसी तरलता और प्रवाह का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। ज्यों-ज्यों हाथ की अंगुलियां चलती हैं वैसे-वैसे ध्वनि बढ़ती और घटती जाती है और कमर और पैरों के आभूषण झूम-झूम कर हंसते नजर आते हैं। देह के प्रत्येक भाग को पूर्ण आस्था से निर्मित करके कैसा अद्वितीय उपहार इस मण्डप में कलाकार ने दिया है। जिसके वस्त्रों की फहरान और सलवटें, कंगन और भुजबन्ध सम पर आते ही प्रसन्नता प्रकट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

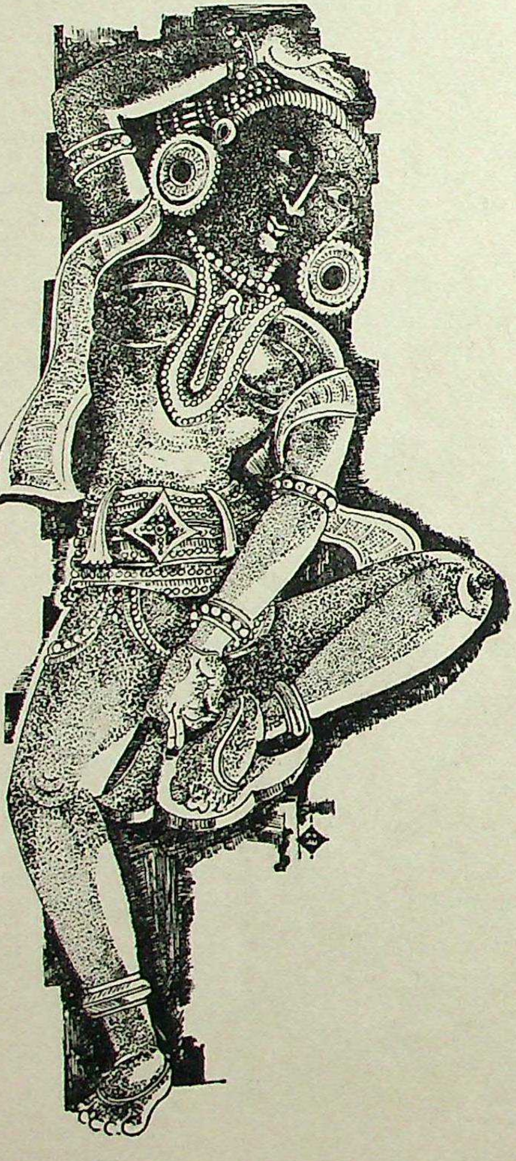

करते हैं। पत्थर पर उतार ग्रौर चढ़ाव के ग्रनेक कटाव दिखाते हुए पुजारी ने ग्रपना पथ ढूंढ ही लिया जहां उसे ताल के मधुर बोल सुनने थे ऊंचे ग्रासन पर खड़ी ढोलक-वादिनी से।

मजीरा वादिनी:– यह है सरस ताल की झंकार में खोई हुई मजीरा वादिनी। डोलती हुई रेखाग्रों के पुन्जों में स्वर बांध कर कलावन्त ने कैसा स्पन्दन उत्पन्न कर दिया है। दाहिने हाथ के ऊपर उठने पर उरोजों के तनाव ग्रौर खिचाव में उल्लास ग्रौर विलास की कैसी भावना पिरोई है। मंगल टंकार की ध्वनि बजने वाली है। समस्त मण्डप की स्वर वादिनियां सचेत हो ग्रागे की गति तीव्र करने पर कटिबद्ध हैं। वादिनी के लोचन की रेखाएं कैसी तनी हुई हैं। वेणी का वैभव निहारते बनता है। हाथों की कलाई ग्रौर कटि की छटा ग्रपना ग्रपना प्रदर्शन स्वाभाविक रूप से कर रही हैं। वस्त्रों की सिहरन के पास के शून्य स्थान में जादू छिड़क दिया है। पाषाण बोल उठा है। उसके हृदय की कलिका गद्‌गद् हो ग्रनायास ही वादिनी के चरणों में समर्पित होने को है।

बांसुरी वादन–स्वरों की प्रथम धुन ने ही मन्दिर के वातावरण में गम्भीरता की लय उत्पन्न कर दी है। हृदय की तह से निकले हुए निनाद को बांसुरी में गुंजरित कर प्रतिभा ग्रपने ग्रनुपम संगीत कौशल का परिचय दे रही है। बीच बीच में मुर्की ग्रौर मीण्ड दे दे कर तूने नवजीवन बरसाते हुए समा बांध दिया है। तेरी समस्त प्रक्रियाग्रों को शिल्पी ने ग्रनूठे उत्साह के साथ घडा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसकी छैनी रात दिन तुझे रूप देने और संवारने में लगी रही। उसकी कल्पना सदियों की साधना के पश्चात् साकार हुई और वह प्रतिमा बन कर प्रतिष्ठित हुई ऋषभदेव के इस अलौकिक सभा मण्डप में। अपने जीवन की अर्जित इस महान राशि की चिरकाल के लिये स्वर में विभोर हो समाधि लेते देख कलाकार ने अपने को धन्य समझा। रूप का विकसित निखार और भावों का अद्भुत सोपान मोटे मोटे आकारों को कुरेद तूने द्रष्टा को कराया और वह तुम्हारे फकीरी रूप में छिपे कलाकार का दर्शन करने में सफल हुआ। तुम्हारी छैनी और हथौड़ी से घड़े ये बुत नहीं देवता हैं।

प्रमुख जैन मन्दिर के अतिरिक्त यहां तीन अन्य मन्दिर और हैं जिनके बाहरी भाग में अनेक सुन्दर मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं जो दर्शकों का ध्यान अपनी ओर निरन्तर आकर्षित करती रहती हैं। पहाड़ी नदी के ठीक किनारे एक विशाल चबूतरे पर स्थित सूर्य भगवान का मन्दिर हिन्दू स्थापत्य की दृष्टि से विशेष महत्व का है। इस मन्दिर के बाहरी भाग में अनेक देवी देवता रथ पर आसीन हैं जिन्हें अश्व पूरी शक्ति से लेजा रहे हैं। आस पास के स्थान पर जीर्णावस्था में खड़े स्तम्भ और मण्डप इस बात की साक्षी देते हैं कि यहां कभी एक विशाल शिव मन्दिर और था। प्रचिलित धारणा के अनुसार इस मन्दिर में कभी वहां "शिव-पार्वती" की मूर्ति प्रतिष्ठित थी जो आज कल प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर कुण्ड के चबूतरे पर रक्खी हुई है। इसी स्थान पर रखी गणेश जी की मूर्ति की भी अपनी कहानी हो सकती है।

भगवान हमें दृष्टि दे कि हम इस विशाल मन्दिर के चप्पे-चप्पे पर लगे अलौकिक रूप सौन्दर्य और दिव्य कान्ति के दर्शन कर सकें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh